THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI K. K SHAH) Sir, so far as any political m irder is concerned, I have no hesitation in saying that it is most condemnab e. On this question there cannot be two opinions Even when Shri Krishna Desai, who did not belong to our party, was murdered in Bombay, we exp essed most vehemen ly in the same language Therefore, on this question, those who are lovers of democracy will never hesitate in condemning any political murder, any murder on account of political reasons But, I wish Shri Rajnarain had not brought in the other points so far as political murder are concerned

MR DEPUTY CHAIRMAN . Mr Bhupesh Gupta . (*Interruptions*)

डा० भाई महावीर : आप सी० पी० आई० के लोगों की हत्या की बात करते हैं या सबकी।

SHRI K. K SHAH All, all.

डा० भाई महावीर · कब किस का नाम लिया। श्री रामगरीब दास का नाम लिया।

SHRI K K SHAH . I did not take Upadhyaya's c se because the judgment of the Court does not say so Otherwise, I would have taken that Even if there is a shadow of doubt that there is a political motive, I condemn it so far as the case of Upadhyaya is concerned There cannot be anybody belonging to any party who will not condemn the murder of any political leader . . . (*Interruption*) . . We all condemn it.

MR DEPUTY CHAIRMAN All right Mr Bhupesh Gup a

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh) . Do you consider . . (*Interruptions*) it a political murder? . . (*Interruptions*) I want to know whether the government considers these murders as a crime or as extremists indulging in their activities? Is he a murderer or a criminal or an extremist?

SHRI K K SHAH It depends (*Interruptions*) Now, you cannot answer such a question, because every case will depend on merit. Here is a general question

(*Interruptions*)

SHRI MAHAVIR TYAGI Murder is a crime according to law and everybody who murders is a criminal

SHRI K K SHAH . Everybody who murders is a criminal. Whether there is a political motive or not will depend on what the evidence discloses But, in general, I agree with every Member of the House that any political motive for committing a murder is reprehensible and should be condemned

---

TRIBUTES TO LATE TRILOKYANATH CHAKROVARTY MAHARAJ

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Sir, I took the permission of the Chair to make a reference to the passing away of Shri Trilokyanath Chakrovarty, popularly known as 'Maharaj' He was the hero of the undivided Bengal and unpartitioned India, a great and noble fighter in India's freedom struggle, a man of unmatched courage, devotion and sacrifice, who spent thirty years of his life in prison under the British and then also, after the partition under the Pakistani Government at the time of the Indo-Pak War

Sir, I wish to make a refe ence to this man of great simplicity and yet, of great courage, a man whose heart was hard as granite, yet soft as a flower, because he was one of the outstanding figures of old Bengal, the Bengal of pre-partition days, who, in his youth, came out of his home and challenged the British might, of course, not in a non-violent way, but in a different way, but, all the same, in a spirit of courage and heroism, which inspired the younger generation of the time. Many of us, Sir, on both sides of the House were inspired by the courage and sacrifice of such a man as Shri Trilokyanath Chakrovarty Sir, we pay our tributes today, and I am sure, everybody here .

HON. MEMBERS. Yes, Yes

SHRI BHUPESH GUPTA . will pay tribute to him as an example of the great and glorious past of our people, who are divided in two countries, none the less sharing the common heritage

Sir, Trilokyanath Chakrovarty in later days acted as the cementing bond

[Shri Bhupesh Gupta.]

between the people of India and the people of Pakistan. He was the symbol of unity between Hindus and Muslims and you know the conditions in which he stood for the cause in Pakistan and yet his heart was also with the people of India; he stood for friendship between India and Pakistan all his life. We heard his Address to the Members of both the Houses of Parliament in the Central Hall presided over by the Speaker His last message was "Hindu-Muslim unity and Indo-Pakistan amity." We remember this message and it will be our cherished desire to fulfil this message by our actions

Sir, he has passed away today but he has left a great inheritance for all of us to share. He died at the age of 82. He expressed great faith in the younger generation, in the people, in the students and the workers and also the toiling masses. He was a believer in socialism and progress, in democracy and secularism. He rose above many petty considerations. I knew him from 1930 onwards I can tell you that rarely have I seen such a men of great courage and sacrifice, such simplicity, such compassion and human sympathy. Sir, Trilokyanath Chakrovarty deserves tributes not only of the people of this country but of the whole sub-continent, all men of goodwill, Hindus and Muslims, because we all cherish a great man's contribution to a great cause.

Trilokyanath Chakrovarty shall ever live in our hearts as a mighty Indian, as a noble son, as a firy fighter and patriot, as an uncompromising and unyielding fighter against the British with a record full of selfless-service and suffering.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मै भी श्री त्रैलोक्य महराज के असामयिक और शोकपूर्ण निधन पर अपना शोक और समवेदना प्रकट करना चाहता हू । मै श्री त्रैलोक्य महाराज की खूबियो से परिचित हूं और मै इस सदन को बताना चाहता हूं कि जिस स्थिति मे इस मुल्क का बटवारा कभी किया गया उससे बहुत बडा आत्मघात उनको हुआ था और सदन के सम्मानित सदस्य शायद परिचित होगे कि बावजूद तमाम मुसीबत और दिक्कतो के वह पूर्वी पाकिस्तान मे डटे रहे, वहां से हटे नही और इस बात की मुझे और खुशी है कि जो हमारी धारणा और विचारधारा है भारत और पाक के सबंध मे उसका प्रतिनिधित्व सही रूप से श्री त्रैलोक्य महाराज ने किया । श्री त्रैलोक्य महाराज भारत पाक के बटवारे के विरोधी थे । वे मुल्क का बटवारा नही चाहते थे । उस स्थिति मे जब कि भारत के राजनीतिक दल भी मुल्क के बटवारे की ताईद किये, उन्होंने बराबर उस का विरोध किया । आज भी हम डंके की चोट पर कहना चाहते हैं कि अगर त्रैलोक्य महाराज के प्रति हमारा सम्मान है, यदि उनके प्रति हम आभार प्रकट करना चाहते हैं, तो भारत पाक का महासंघ बनाने की योजना कार्यान्वित करनी ही पड़ेगी । त्रैलोक्य महाराज चाहते थे कि भारत और पाक की नागरिकता एक हो जाय, भारत और पाक की जनता अपने को एक समझे और भारत और पाक के लोग एक महासंघ के रूप मे बंध कर अपने तरक्की और विकास के सपने को पूरा करे । हमें अफसोस है कि त्रैलोक्य महाराज जिस दिन आ रहे थे इलाहाबाद स्टेशन पर, तो हमने उनका स्वागत किया था । हमारा पैर थोडा खराब था, चूंकि भीड काफी हुई, उस भीड़ में उन तक पहुंच नही हो रही थी तो हमने माला एक दूसरे के हाथ में भेज दिया, उन्होंने हमारा माला पहना दिया । इस तरह हमें भी दर्शन-लाभ हो गया । आप सोच सकते हैं कि कितनी मार्मिक पीड़ा हुई होगी जब यकायक हमने अखबार में पढा कि त्रैलोक्य महाराज दुनिया से उठ गये । हमें बडा अफसोस हुआ कि हमारे देश में आये और अब नही रहे । हम साइकालिजिकल, मनोवैज्ञानिक जगत में विचरण करने लगे कि इस देश में आये और यकायक एसी स्थिति क्यो पैदा हुई तो हमने उसका विश्लेषण किया । सदन में उस विश्लेषण को भी मैं कह देना चाहता हू । चूंकि वह भारत वर्ष में आये और जिस प्रकार से भारतीय जनता ने उनका आदर के साथ सत्कार किया, उनके गुणो को स्वीकार

किया, राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य संग्राम में जो उन्होंने अपनी आहुति दी, उसके प्रति श्रद्धा अर्पित की, उन तमाम बातों को देख कर भी श्री त्रैलोक्य महाराज के मन में एक पीड़ा हुई थी कि क्या कारण है, क्या पाप है कि आज एक मुल्क हिन्दुस्तान नहीं रहा, हिन्दुस्तान बंट गया, एक भारत एक पाकिस्तान बन गया और फिर वह हिन्दुस्तान बने, भारत-पाक की जनता एक हो, दोनों में सद्भावना आये, इस भावना को प्राप्त करने की अभिलाषा ही में श्री त्रैलोक्य महाराजा की आत्मा उनके पार्थिव शरीर को छोड़ कर चली गई; ऐसा मैं समझता हूं।

इसलिये मैं आज बहुत दुःखी हृदय से अपनी पूरी श्रद्धा उनके चरणों पर अर्पित करते हुए उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उनके सपनों को पूरा करके हम भारतवासी चैन लेंगे और भारत और पाक की जनता को, दोनों को, सुखसमृद्धि, सम्पता-समृद्धि के मार्ग पर ले जा कर के एक करेंगे। इसलिये मैं पुनः बार-बार अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

SHRI A. P. CHATTERJEE (West Bengal) : We associate ourselves with the sentiments expressed by Mr. Bhupesh Gupta I will only add one sentence that when Mr. Chakravarthy Maharaj came to India, from him we also got corroboration of what we were hearing that in East Pakistan a progressive movement of students and the toiling people is on the upsurge and they are looking to the interests of all the citizens of Pakistan and of all the communities. That was also the story which was brought to us by Maharaj and for that at least we are thankful to him. I think that will go a long way to cementing the unity between the progressive forces both in Pakistan and in India.

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (राजस्थान) : श्री त्रैलोक्य महाराज के आकस्मिक निधन पर मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। यह हमरा सौभाग्य था कि उनके जीवन के अंतिम दिनों में हमें यहां उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने पाकिस्तान की परिस्थितियों और वहां पर बसने वाले हिन्दुओं के प्रति जो व्यवहार हो रहा है, उसका भी चित्र इस देश के वासियों के सामने रखा, विशेष कर पिछले दिनों में जिस बड़ी संख्या में हिन्दुओं को जिन मजबूरियों में भारत में आने पर बाध्य होना पड़ा है। वहां की नागरिकता के सम्बन्ध में जो भेद चल रहा है और कुछ पदों के लिये पाकिस्तान के किसी नागरिक को महज इस वजह से कि वह हिन्दू है, उससे वंचित किया जा रहा है, इस बात की तरफ भी उन्होंने देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया। सरकार के इस कर्तव्य के बारे में हम लोग बार बार आग्रह करते रहे हैं। मैं समझता हूं कि श्री त्रैलोक्य महाराज ने परिस्थितियों का जो वर्णन इस समय संसद् के सदस्यों के सामने किया, उससे इस सरकार को अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये।

मुझे अफसोस इस बात का है और दुःख है कि श्री त्रैलोक्य महाराज फिर से पाकिस्तान न जा सके और पाकिस्तान जा कर इन हिन्दू बन्धुओं के मन को बल प्रदान करने का जो उन्होंने जीवन में एक कर्तव्य निभाया था, उसकी इसी देश में यहां आने पर इतिश्री हो गई। मैं चाहूंगा कि सरकार पाकिस्तान स्थित हिन्दुओं के प्रति इस कर्तव्य को पहिचाने और अपने भाई जो कि वहां पर पीड़ित अवस्था में हैं, वह वहां इज्जत और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकें, इसकी तात्कालिक व्यवस्था करें।

मैं फिर अपने दल की ओर से श्री त्रैलोक्य महाराज के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI S. N. MISHRA): Mr. Deputy Chairman, Shri Trilokyanath Maharaj spoke to us the other day; during the last week we heard him. On that I think there could be absolutely no other opinion except this on his speech that that was one of the greatest speeches that we have heard in the Central Hall of Parliament. That kind of a speech can come only from the lips of a great life, and every word that he spoke to us, Mr. Deputy Chairman, was infused with the purest of intentions and the highest of ideals that always

[Shri S N Mishra]

characterised his life from the very beginning His inspiring message, I have no doubt, has left an indelible impression on our mind and that is bound to constitute one of our great heritages That is how I could think about the speech that he was making the other day It was not our privilege to hear his speech in the original, and yet the interpretation of that speech was extremely inspiring

Now may I say that this House stands completely united in the view that the very ideals that he wanted to preach to us are the ideals on which this nation should take its stand? And it would be also in the interests of Pakistan to take its stand on the same ideals He was speaking to both the countries, India and Pakistan, in the spirit in which any great man of his stature would have spoken I think that the speech that was made by him the other day should be made available in its full form not only to Members of Parliament but also to the country at large I really do not know whether any transcript of his speech has been preserved If it has been recorded, it should be made available on a much wider scale than it has been possible through the newspapers reports

Now with these words I would like to pay my tribute to him, and I think I can do so on behalf of the entire House The Leader of the House is also there May I say that we should also convey our message of condolence to the members of his family wherever they happen to be? And it would indeed be in the fitness of things that the Chair should convey our message of condolence to the members of his bereaved family

SHRI DAHYABHAI V PATEL (Gujarat) Sir, on behalf of my self and my group I would like to associate myself with the sentiments expressed in this House It is well known, Sir, that our leader has been expressing the same sentiments that Shri Trilokyanath Maharaj expressed before the country recently and also when he came to Parliament Let us hope that both the countries will see sense and give up hostility at no distant date, come closer together and also work together for the betterment of both the countries, ours and theirs, as they are today, or for the betterment of the large one country that it was a few years ago in which we both lived together before partition

श्री गगाशरण सिह (नाम-निर्देशित) श्रीमन्, त्रैलोक्य जी महाराज कोई एक मामूली व्यक्ति नही, वह एक प्रतीक थे, एक परम्परा थे, वह परम्परा जो हमारे पुराने राष्ट्रीय आदोलन को आज से बाधती है वह परम्परा जो विभाजन के बाद भी नही टूटी । विभाजन के बाद भी उस क्रातिकारिता को, उस प्रोग्रेसिवनेस को उन्होने कायम रखा । जब हमारे देश का विभाजन हुआ, बहुतो के धीरज छूट गये, हमारे बहु। बडे-बडे सेनानी अपने पथ से विचलित हो गये । बहुत से ऐसे लोग थे, जिन्होने क्राति-कारी आदोलन मे, देश की आजादी के आदोलन मे, बहुत बडा हाथ बटाया था, नेतृत्व किया था, उनको भी लगा उनके सामने अधकार छा गया है । लेकिन त्रैलोक्य जी महाराज उस अधकार के युग मे उस क्रातिकारिता को जगाये रहे और उन्होने कभी परिस्थिति के साथ समझौता नही किया उनकी जो भावनाए थी, जो आदर्श थे, उन्हे परिस्थियो के सामने नही झुकने दिया । इसलिये उनके सीधे सादे लिबास मे, सीधी सादी बोली मे जो एक शक्ति थी, उस शक्ति का अदाजा हम नही कर सकते थे । जिनको उन्हे व्यक्तिगत रूप से जानने का मौका मिला है, उनके लिये तो आज सच पूछिये तो सही मानो मे उनके बारे मे कुछ कह सकना मुश्किल है । मुझे वह दिन याद है, देश के बटवारे के बाद, जब लोग तितर बितर हो रहे थे, पूर्वी पाकिस्तान से लोग इधर आ रहे थे, उस समय भी त्रैलोक्य जी पूर्वी पाकिस्तान मे रहे । वहा उन्होने लोगो को सगठित किया जो सगठन था उसको कायम रखा, पूर्वी पाकिस्तान सोशलिस्ट पार्टी के चैयरमेन बने । उसके काम को चलाया । जिस तरह ब्रिटिश जेल में वह रहे, उस तरह से पाकिस्तान के जेल में रहने के बाद भी जो उनकी लो थी, प्रकाश था, वह धीमा नही पडा, बल्कि ऐसा

लगता था दिन प्रति दिन जैसे जैसे उनकी उम्र बढ़ती जा रही है, वैसे ही वैसे उनका प्रकाश, उनकी तीव्रता उनकी आग और तेज होती जा रही है। हालांकि वह जिस उम्र के थे, उस उम्र तक पहुंचते-पहुंचते बहुत से लोगों की प्रतिभा क्षीण हो जाती है, आग धीमी पड़ जाती है। लेकिन जो लोग उन्हें पहले से जानते थे, उन्होंने जब वह सेन्ट्रल हाल में आए थे तब देखा कि उनकी प्रतिभा समय के साथ या परिस्थिति के साथ क्षीण नहीं हुई, बल्कि वह पहले से भी अधिक दिन प्रति दिन बढ़ती गई।

मैं समझता हूं कि सबसे बड़ी श्रद्धांजलि उनके प्रति यह होगी कि जो विचार उन्होंने व्यक्त किये, जिनके लिए उन्होंने अपना जीवन लगाया, उन विचारों को हम कार्य रूप में परिणत कर सकें और जो आखिरी सन्देश उन्होंने पार्लियामेंट में दोनों सदनों के सदस्यों के सामने सेन्ट्रल हाल में दिया, मैं समझता हूं कि वह सन्देश ऐसा है, जो हमारे लिए मार्ग-दर्शन का काम कर सकता है और खास कर आज के जमाने में जबकि मुल्क को इसकी बड़ी जरूरत है।

मैं अपोजिशन के लीडर के साथ पूरी तरह सहमत हूं कि उनके आखिरी बिल और टेस्टामेन्ट की तरह, जो उनका आखिरी भाषण है, उसका देश में अच्छी तरह प्रचार किया जाना चाहिये और भारत की प्रत्येक भाषा में उसे छपवाकर सिर्फ संसद सदस्यों को ही नहीं बल्कि देश के सामने रखा जाना चाहिये। हमारे देश और पाकिस्तान में क्या संबंध रहना चाहिये, उस संबंध में हिन्दू मुसलमानों के बीच में जो संबंध होना चाहिये, अल्पमत वालों के साथ क्या संबंध रहना चाहिये, उसके संबंध में तथा हमारे नौजवान क्या करें, उसके संबंध में, वह मार्गदर्शन करने वाला है।

इन शब्दों के साथ उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

SHRI CHITTA BASU (West Bengal): I would also like to join and associate myself with the sentiments expressed by hon. Members in this House. Sir, Trailokya Chakrovarty, popularly known as Maharaj, not only inspired a large number of Youths of our country by his burning patriotism, by his undying courage and dedication to the cause but also struck fear in the hearts of the imperialists of those days when our country to a man was fighting for freedom. Sir, even after the partition of Bengal he remained in East Pakistan, under went many a tribulation and suffering and spread the message of unity between Hindus and Muslims there. Unlike others, he remained there, lived there, worked there, and worked for the unity of Hindus and Muslims in the East Pakistan State. He not only worked for the unity of Hindus and Muslims there but he also understood that unless there is better relation, more cordial relation, between India and Pakistan, this problem of the minorities in both the countries would not be solved satisfactorily. He came over to India to spread that message and during his latest address to the people of this country and of the world he has left for us a very valuable message, a very rich heritage, and I think it would be in the fitness of things that we also should continue his work in this part of the country to bring about peace and amity between the two States and work for secularism socialism and democracy in this part of the country. It is by that method only that we can fulfil his message to Parliament. With these words I pay my tribute to the memory of this great leader.

SHRI HAMID ALI SCHAMNAD (Kerala): Mr. Deputy Chairman, Sir, let me also on behalf of my party express my deep sense of regret and also associate my self with the sentiments expressed by Members of this House on the demise of Maharaj. Sir, I had the honour and pleasure of hearing him in the Central Hall last week and nobody thought at that time that he was bidding good bye for ever. What surprised me was his wonderful memory; he could even recollect the names of leaders whom he met at cannanore and Bangalore Central Jail. He also made a reference to Moplah Rebellion and the leaders he met when he was in Cannanore Years ago. His speech was really educative, impressive and inspiring and I am quite sure Hindus and Muslims of this country would follow

[Shri Hamid Ali Schamrad.]

the advice given by this great leader; not only that, I am quite sure that leaders of Pakistan also would follow that so that Pakistan and our country India can thrive together and go to the topmost of the world as brother and sister.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI K. K. SHAH): Sir, some remiscences in one's life are so poignant and such a thing happened so for as Maharaj was concerned. On the 8th night when we were dining together and the Prime Minister insisted upon serving the Maharaj, little did we think that in the night at about 3 A.M. he would pass away. In those days of 1929 to 1932 we remembered what inspiration we used to draw from the messages that we used to receive from the Maharaj. He was one of the few figures in the history of the world where it will be difficult for historians to explain that a human being can be command such a high sense of Justice, fairplay, democracy and so on. Not only that. After partition, to which he was opposed, he remained in Pakistan and tried his best to see that the damage caused by partition was undone. In fact, a large number of Hindus could have stayed on in Pakistan because of the untiring efforts made by the Maharaj. Sir, not only this generation but also the generations to come will be drawing inspiration from the Maharaj. I am sure his inspiring example and the vibrations that his life will generate will see that in this country unity, secularism socialism and democracy subsist. Sir, I join, with my friends in paying our homage to this great departed leader.

REFERENCE TO THE LAND GRAB MOVEMENT

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : अब मेरा भी हो जाय । चेयरमैन से मैंने कहा था, उन्होंने कहा था कि क्वेश्चन्स के बाद एलाउ करेंगे ।

श्री उपसभापति : आप क्या कहना चाहते हैं ?

श्री राजनारायण : चेयरमैन को बता चुके हैं, सचिव को बता चुके हैं, अब आपको बताएं ?

श्री उपसभापति : लैंड ऐजीटेशन चल रहा है उसके बारे में ?

श्री राजनारायण : जो हमारे साथ कल बीता उसके बारे में ।

श्री उपसभापति : मुझे ऐसा पता चला है कि कल इसके बारे में कालिंग अटेंशन आ रहा है ।

श्री राजनारायण : हमारे साथ जो कल बीता उसके बारे में मैं बताऊंगा, प्राइम मिनिस्टर साहिबा ने जो हमारे दल को खत लिखा है उसके बारे में बताऊंगा । इसके बारे में बहुत सा कल होगा वह आप कल देखेंगे ।

श्री उपसभापति : कल कालिंग अटेंशन है. . .

श्री राजनारायण : 9 अगस्त के बाद से मैं इस बात को सोच सकता हूं कि सरकार किसी समय हमको गिरफ्तार कर ले । कल कम कैसे आ गए बच कर इस पर सब लोगों को आश्चर्य है । इसलिए हमने चेयरमैन साहब बहादुर से सविनय निवेदन किया कि आप हमको मौका दीजिए, उन्होंने कहा क्वेश्चन्स के बाद हमको हमारे बुजुर्ग श्री जयसुखलाल. . .

श्री उपसभापति : जहां तक मैं समझता हूं आपको परमीशन नहीं मिली है ।

श्री राजनारायण : श्री जयसुखलाल हाथी ने कहा कि क्वेश्चन्स के बाद आप इसको उठाएंगे, चेयरमैन ने कहा क्वेश्चन्स के बाद मैं आपको उठाने दूंगा । श्रीमन्, आप क्या जानते हैं, यह मैं नहीं जानता, आपके मन में मैं नहीं बैठा हुआ हूं, हम अपनी बात जानते हैं, हमारे साथ अभद्रता का व्यवहार किया जाय और हम सदन में न बोल पाएं ।

श्री उपसभापति : आप कल नहीं कह सकेंगे ?

श्री राजनारायण : कल मैं न रहूं । अब तो मैं सत्याग्रही हूं 9 तारीख से ।

श्री उपसभापति : अगर कहना है तो 1 मिनट में कह दीजिये ।